विजयानन्द विजय

बड़ी माँ

सुहागरात में ठाकुर साहब ने जब पत्नी रजनी को देखा, तो उन्हें यकीन ही नहीं हुआ !
सुबह हुई, तो उन्होंने माँ को रजनी के बारे में बताया, और माँ-बेटे ने जुबान सिल ली।

पाँच वर्ष बीत गये।जब ठाकुर साहब के आँगन में फूल नहीं खिला, तो माँ ने बेटे का मन टटोला और रजनी से भी राय ली।रजनी सहमत हो गई।

नीलम ने जब डोली से उतरकर हवेली में कदम रखा, तो रजनी नीलम की बड़ी दीदी बन गयी। धीरे - धीरे दोनों में प्यार और विश्वास बढ़ता गया। बहनापा तो ऐसा हो गया कि दोनों एक-दूसरे पर जान छिड़कतीं। पूरा गाँव उन पर रश्क करता।उनकी मिसाल देता। कभी दीदी की तबीयत खराब हो जाती, तो नीलम एक पल को भी उनका साथ न छोड़ती... रात-दिन उनकी सेवा-सूश्रुषा में लगी रहती। और, अगर नीलम को जरा - सा बुखार भी हो जाए, तो रजनी सारा घर सिर पर उठा लेती...नौकरों-चाकरों को लगा देती...ये लाओ..वो लाओ..ऐसे करो...वैसे करो।बैचैन और बेकल तो इतनी कि कितनी जल्दी ठीक हो जाए उनकी प्यारी बहन ! निश्छल प्रेम से अभिसिंचित था खुशियों भरा यह घर-आँगन।

वक्त के साथ ठाकुर साहब की बगिया लहलहाई। नीलम की फुलवारी में दो फूल खिले...एक फूल-सा बेटा और एक गुड़िया-सी बेटी। रजनी का घर-आँगन गुलजार हो गया। ठाकुर साहब की हवेली रोशनी से नहा उठी।नीलम ने तो सिर्फ जन्म दिया था बच्चों को, पर पाला बड़ी माँ ने। रोज उन्हें नहलाना-धुलाना, कपड़े पहनाना, बाल सँवारना और अपनी गोद में बिठाकर लाड़-प्यार-दुलार से खिलाना रजनी का ही काम था। नीलम रसोई सँभालती। बड़ी माँ की गोद में खेलकर ही बड़े हुए दोनों बच्चे - कुँवर और गुड़िया। हर काम वे बड़ी माँ से पूछकर ही किया करते थे।

" बड़ी माँ...बड़ी माँ।" करते जब नीलम अपने बच्चों को देखती, तो दीदी का बच्चों के लिए हुलसता प्यार देखकर उसकी छाती जुड़ा जाती। इतना ध्यान तो शायद वह न दे पाती अपने बच्चों पर। वह ईश्वर से हर पल मन-ही-मन प्रार्थना करती कि उसके बच्चों से बड़ी माँ का प्यार कभी न छूटे। यह सब देखकर ठाकुर साहब का सीना भी गज भर चौड़ा हो जाता और वे निश्चिंत होकर लग जाते अपनी खेती-गृहस्थी के काम में।

मगर ऊपर वाले की मर्जी के आगे भी भला कभी किसी की चली है ? घर में गुड़िया और कुँवर को कल से कॉलेज भेजने की तैयारी चल रही थी, कि रात में अचानक बड़ी माँ के सीने में तेज दर्द उठा। आनन-फानन में हवेली से आधी रात में ही कई गाड़ियाँ हास्पिटल की ओर दौड़ पड़ीं। एक गाड़ी में नीलम की गोद में रजनी बेसुध पड़ी थी, ठाकुर साहब उनका हाथ कसकर पकड़े हुए थे।

मगर, सुबह होते-होते सारी गाड़ियाँ वापस लौट आई थीं हवेली पर...। रजनी का निर्जीव शरीर जब गाड़ी से उतारा गया, तो सारे गाँव में चीत्कार मच गयी !

अंतिम विदा से पहले, घर के आँगन में जब रजनी के वस्त्र बदले जाने लगे, तो गाँव भर की महिलाओं की आँखें फटी-की-फटी रह गयीं...और सभी के मुँह से बरबस निकल पड़ा...हे देवी माता !

रजनी की मृत देह को घाट पर ले जाने की तैयारी हो रही थी और नीलम के आँसू थम नहीं रह थे। " दीदी..दीदी " की करूण चीत्कार सबके कलेजे को चीर रही थी। ये प्रेम और ऐसा विछोह ! हे ईश्वर ! ऐसा प्रेम तुम हर किसी को देना। दोनों बच्चे " माँ...माँ..." पुकारते हुए बड़ी माँ से लिपटे जाते थे। हृदय विदारक दृश्य था ! सबकी आँखें नम थीं। ठाकुर साहब अपनी आँखों में आँसुओं का सैलाब थामे चट्टान की तरह एक ओर खड़े थे...।

अर्थी गंगाघाट की ओर चल पड़ी। आसपास खड़ी ग्राम्य महिलाओं में खुसफुसाहट शुरू हो गयी थी...चली गयी बेचारी..। किन्नर थी...लेकिन माँ थी...! जय देवी माँ।।